सिडनी।
ली पकड़ने का दावा
गया है कि स्टाउट
ा लाख से भी ज्यादा
सें छोटी और हल्के
है। इस मछली को
था, लेकिन अब तक
तौर पर शिंडलेरिया
की लम्बाई केवल 7
है। वर्तमान में दुनिया
नाम दर्ज है। इसके
र है। स्टाउट इनफैंट
काफी बड़ी है। यह
या की रिकॉर्ड्स ऑफ
े तौर पर दर्ज किया

दार–ए–सलम।
ो अपनी जान गंवानी
हासिल करना चाहता
यार का। यह शक्ति
ा ने उसके शरीर के
ह से उसकी मौत हो
लुटेरों के गिरोह का

करना चाहता हूं
है।

तुरंत विवाह कर डालो।
विवाह के बाद एक ही

डरते है?

ी से नही ड रते।

र को बल्कि देश की
अंधेरे में रखा है।
के र यात्रा के दौरान
या है। कदमतला उप
छोटे रंग आकार वाले
गया था। इस बारे में
धिक ब जट आया है।
है कि जारवाओं के
रवाओं के इलाकों में
उपराज्यपाल प्रो. राम
में आयोजित गोष्ठी में
ज तक कुछ नहीं हो

साहित्य दर्पण

गजलें

रशीदा इकबाल 'सना'

(1)

आग है लेकिन धुआँ कुछ भी नहीं
यूँ हमारे दरमियाँ कुछ भी नहीं
हम किधर जाते खुदा उस रेत में
उससे आगे था निशां कुछ भी नहीं
नाम तेरा ही सनम लेता रहा
बाद उसके दास्ताँ कुछ भी नहीं
मौत भी दर–आशना होती नहीं
जिन्दगी का ही निशां कुछ भी नहीं
छोड़कर जो तुम गए आबाद घर
रह गया खाली मकां कुछ भी नहीं
कुछ मुसाफिर हैं "सना" भटके हुए
साज–ओ–सामां करावां कुछ भी नहीं

(2)

उसी रौशनी का ख्याल आ गया है
किसी अजनबी का ख्याल आ गया है
खुद ही हमने पोंछे हैं अपने ही आंसू
फिजा की नमीं का ख्याल आ गया है
ये दुनिया मुझे अब लगे है खिलौना
मुझे दिल्लगी का ख्याल आ गया है
छुआ है जो दामन कभी मैंने उनका
मुझे बेखुदी का ख्याल आ गया है
हर इक शै लगे है मुझे बेवफा सी
तेरी दोस्ती का ख्याल आ गया है
कदम बढ़ रहे हैं सूए–मैकदा फिर
"सना" तिश्नगी का ख्याल आ गया है

(3)

इस जहाँ में मौत जैसी जिन्दगी है हर तरफ
कैसी ये बस्ती है यारो तिश्नगी है हर तरफ
हम जिहादे–जीस्त से घबरा चुके थे अब तलक
रास्ता रोके खड़ी फिर जिन्दगी है हर तरफ
किसी तरह गुजरेगी मेरी जिन्दगी इस शहर में
बोलता कोई नहीं बस आदमी है हर तरफ
कब से तेरे मुंतज़िर हैं अब चला जाता नहीं
थक चुके हैं चेहरा–चेहरा अजनबी है हर तरफ
बेखुदी में किस जजीरे पे उतर आए हैं हम
दूर तक बस तीरगी ही तीरगी है हर तरफ
उम्र का लम्बा सफर अब और कितना रह गया
धूप के सैलाब में तिश्ना–लबी है हर तरफ
कौन कहता है लगेगी तुमको ठोकर ऐ "सना"
दोस्त मेरे आंसुओं की रौशनी है हर तरफ

रहस्य रोमांच

वह पांच सौ वर्षों से सो रही है।

कुछ वर्ष पहले चिली के सेन्टयागो स्थान से करीब 25 मील दूर एलपोमी पहाड़ी पर बर्फ से ढका हुए एक बहुत ही पुराना मंदिर मिला है। समुद्र की सतह से सोलह हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित इस मंदिर में एक आश्चर्यजनक वस्तु पुरातत्ववेत्ताओं के हाथ लगी। यह आश्चर्यजनक वस्तु है बारह वर्षीय राजकुमारी का शव। पुरातत्ववेत्ताओं का मत है प्राचीन युग की सबसे सुरक्षित वस्तुओं में से यह एक है। शव के बदन में सोने चांदी के गहने हैं और वह आस्तिन रहित वस्त्र से लिपटा है। यह शव निःसंदेह सूर्यवंशी इन्का लोगों के बारे में काफी जानकारी देते हैं।

इन्का राजकन्या का यह शव सम्भवतः पांच सौ वर्ष पुराना है। तबका जब पेरू में सूर्य की पूजा करने वालों की सभ्यता काफी बढ़ी–चढ़ी हुई थी। इस सभ्यता को 1531 में स्पेनी हमलावरों ने तहस–नहस करके रख दिया।

प्रश्न उठता है कि मिजकी ममियों की तरह इन्का लोग शवों को सुरक्षित रखने में क्या औचित्य समझते थे?

यहां इन्का सभ्यता के बारे में भी कुछ जान लेना उचित होगा। संसार की सभ्यताओं के इतिहास में महत्वपूर्ण अध्याय है – इन्का सभ्यता। जब वर्षों की गणना नहीं होती थी, तब अमरीका में इस सभ्यता का उदय हुआ था। अमेरिका के पेरू तथा चिली देशों में इस सभ्यता के अवशेष इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि जब यूरोप के लोग सभ्यता शब्द को ही नहीं समझते थे। तब इन्का सभ्यता अपने उत्कर्ष पर पहुंच चुकी थी।

सूर्य की सन्तान और वह रहस्यमय स्वर्णदण्ड।

सूर्य भगवान अपनी दो सन्तानों को जिनमें एक लड़का था दूसरी लड़की टिठिका का झील पर लाए। बाद में दोनों को जहां चाहें वहां रहें की स्थिति में दोनों को छोड़ दिया। इसके साथ ही उन्हें यह भी आदेश दिया कि जहां कहीं भी वे विश्राम करना चाहें, वहां एक स्वर्णदण्ड अवश्य गाड दें। जहां वह स्वर्णदण्ड पृथ्वी के भीतर धस कर गायब हो जाएगा, वह जगह उनके रहने योग्य होगी और जिस जगह वह स्वर्णदण्ड धरती में समाकर विलीन हो गया, उस जगह का नाम था कुजको। यहीं से इन्का सभ्यता फली और फुली।

इन्का लोग सूर्यवंशी थे । अतः कुछ विद्वानों ने इस सभ्यता का बीज भारतवर्ष में खोजा है। यह सभ्यता भारत से अमरीका पहुंची, ऐसा भी मत पाया जाता है।

इन्का राजकुमारी का मृत भाई के साथ विवाह।

(शेष भाग अगले अंक में)

फिल्मी हलचल

शाहरूख खान की नई फिल्म है 'स्वदेस'

'स्वदेस'। कई लोग इसे आशुतोष की दूसरी फिल्म समझ रहे हैं। उन्हें लगता है कि 'लगान' आशुतोष की पहली फिल्म थी। सच्चाई यह है कि आशुतोष ने 'लगान' के पहले दो अत्यंत मामूली और चालू सी फिल्मों का निर्देशन किया था। उन्हें वास्तविक पहचान 'लगान' से मिली और अब यह पहचान इतनी बड़ी हो गई है कि सभी को 'स्वदेस' पर 'लगान' की छाया दिख रही है। आशुतोष को कोई दिक्कत नहीं है। वह सफाई देते नहीं फिर रहे है कि 'स्वदेस' बिल्कुल अलग तरह की फिल्म है और 'लगान' से इसका कुछ भी लेना-देना नहीं है। वह बेहिचक स्वीकार करते हैं कि अगर किसी को 'स्वदेस' 'लगान' से प्रभावित दिख रही है, तो उन्हें इससे कतई शर्मिंदगी नहीं महसूस हो रही है।

दरअसल, हमारी पुरानी आदत है। एक दर्शक, पाठक और समीक्षक के नाते हम किसी भी फिल्मकार की नई कृति में उसके पुराने काम का प्रभाव खोजते लगते हैं। आम धारणा है कि दो कृतियों में किसी भी प्रकार की समानता नहीं दिखनी चाहिए। माना जाता है कि फिल्मकार चूक जाने पर अपनी पिछली कामयाबी को दोहराने का प्रयास करते हैं। यह धारणा असंगत है। जरूरी नहीं है कि फिल्मकार अपनी हर फिल्म में एक नई भाव-भूमि की खोज करें। दुनिया के बड़े फिल्मकारों पर नजर डालें तो उनकी फिल्मों में भाव का दोहराव साफ दिखता है। कई बार तो उन्होंने एक ही विषय और भाव को अलग-अलग दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया है। सृजन के हर क्षेत्र में यह होता है। सभी को सुर और स्वर की तलाश रहती है। एक बार वह सध जाए तो साधक या सृजनशील व्यक्ति उसी को जीवनपर्यंत निखारता रहता है। अगर आशुतोष गोवारीकर ने 'स्वदेस' में 'लगान' के स्वर को दोहराया है, तो निश्चित ही वह किसी पूर्णता की खोज में है।

'स्वदेस' का नायक मोहन भार्गव अमेरिका के अंतरिक्ष संस्थान नासा में वैज्ञानिक है। अचानक वह अपने गांव लौट कर कुछ करना चाहता है। वह अपने गांव की भलाई के लिए जड़ों की ओर लौटता है। इस वापसी में वह अनेक मुश्किलो का सामना करता है। मालूम नहीं फिल्म में उसे सफलता मिलती है या नहीं? उसकी यह सोच और इच्छा ही महत्वपूर्ण है कि हम चाहें तो मिली हुई परिस्थितियों को बदल सकते है। बदलाव और जीत की यह आकांक्षा 'लगान' में भी थी और लगभग सभी हिंदी फिल्मो में रहती है। आशुतोष ने 'स्वदेस' में इस आकांक्षा को ग्रामीण परिवेश मे रखा है। चूंकि 'लगान' का परिवेश भी ग्रामीण था, इसलिए दर्शकों को सहज ही 'स्वदेस' 'लगान' से प्रभावित लगती है। 'स्वदेस' में एक बड़ा फर्क यह है कि मोहन भार्गव शहरी और आधुनिक नायक है, जो छूट गए परिवेश में लौटता है, जबकि 'लगान' का ग्रामीण नायक भुवन बाहरी मदद (क्रिकेट सीखकर) से अपने परिवेश को बदलता है। इसे 'लगान' की अगली कड़ी के रूप में भी देखा जा सकता है। आशुतोष गोवारीकर की 'लगान' को अपना सुर और स्वर मिला। 'स्वदेस' निश्चित ही उसी सुर और स्वर का विस्तार है। यह देखना रोचक होगा कि आशुतोष ने शैली और प्रस्तुति में क्या नया किया है?